पर कटा पक्षी

(कविताएँ)

जबरनाथ पुरोहित

प्रकाशक: -
युनिवर्सिटी बुक डिपो,
सोजती गेट, जोधपुर
मूल्य : 20.00
मुद्रक : -
श्री विजय प्रिण्टिग प्रेस
जोधपुर।

PAR KATA PAKSHI (Poems)
by Zabar Nath Purohit

डा० नंदकिशोर जी आचार्य
भाई शीन काफ निजाम
डा० अर्जुन देव चारण
और
प्रिय सुशील के लिए

पर कटा पक्षी

पूर्व प्रकाशित 'समय की शिला पर' के पश्चात् लिखी कविताएँ इस नवीनतम काव्य-संग्रह में संग्रहीत हैं।

पूर्व प्रकाशित कविताओं से इन कविताओं में अनुभूति की अभिव्यक्ति में यदि नए आयाम दिखाई दिए तो प्रयास सार्थक समझूँगा।

जबरनाथ पुरोहित

ज्योति,
394, गाँधी चौक,
जोधपुर.

सड़क और पांव

एक लम्बी सड़क

दो छोटे छोटे पाँव

धूप   छाँह

कुह कुह, काँव काँव ।

सुनो ! सुनो सुनो !

चमचमाती सुबह
धीरे धीरे
बदल गई धुंध आयी शाम में
प्यास
पुकारती रही
पुकारती ही रही
इस लहर को
हां, उसी लहर को····
ए···· ए···· ए····
सुनो···· सुनो !···· सुनो !

धार और किनारा

धार
करती बार बार प्रहार
यह किनारा है
कि जो कटता नहीं है
हो रहा संघर्ष
रक्षा के लिए अस्तित्व की ।

तुम कौन ?

वर्तमान ने अतीत से पूछा
तुम कौन ?
उत्तर में
डबडबाई आंखों को
फटी हुई बाँह के सिरे से पूछते हुए
यह कह कर
उलटे पांव लौट गया
कि बेटे ने....
बाप को पहिचानने से इन्कार कर दिया।

दबा स्वर

इधर उधर
चेहरे ही चेहरे
आवाजें ही आवाजें
छुप गया आदमी
दब गया स्वर ।

मन और महामिलन

सांय सांय
खट खट
द्वार खुला
चार बाँहें
दो तन
एक मन
महामिलन ।

न जाने कैसे ?

पूनम की रात को
बालू की टीले पर बैठे
यों ही रेत पर
टेडी मेडी अंगुलियाँ चला रहा था
कि
न जाने कैसे
तुम्हारा नाम लिख गया
दूर से एक आवाज आ रही थी
पि ऽ, पि ऽ।

सुने कौन ?

भरा भरा आकाश
टप टप
टर्र टर्र
तोड़ते मौन
किससे कहें ?
सुने कौन ?

जल और जीवन

कीचड़ में
किलबिलाते कीड़े
कुछ दूर
पानी में उछलती मछलियें
और कुछ दूर
मुंह खोले निस्संकोच तैरते घड़ियाल
यह जल
यह जीवन।

पता नहीं

आँखों के केनवास पर
उभरते
चित्र पढ़ता हूं
अधरों के यंत्र से
फूटते
स्वर सुनता हूं
पता नहीं
यह कविता है
अकविता
नई कविता
या प्रयोग ?

यह आकृति

फेंको मत
इसे नहला दो
चर्च दो चन्दन
दो चार फूल चढ़ा दो
करवा दो कीर्तन
फिर देखो ..
कैसे यह आकृति
आनन फानन
बनती है –
अपनी शाश्वत संस्कृति ।

सिर फिरे लोग

सिर फिरे हम लोग
हाँ, हम सिर फिरे हैं
है कहां हममें समझ इतनी
कि पहिचान लेते जो हवा का रुख
बैठ जाते
आँख अपनी बन्द कर
सीकर अधर
कोई कहे कुछ भी, करे कुछ भी
हमें क्या ?
मतलब हमें होता सिर्फ इससे
कि जलता रहे चूल्हा
पकती रहे हँडिया हमारी
और अपने अहं को
सजाकर करीने से
एक सुन्दर तश्तरी में
काश ! कर पाते समर्पित
महा प्रभुओं के चरण में
चरण-रज उनकी
चन्दन मान, माथे पर लगाते
थपथपाते पीठ वे

हम धन्य हो जाते
मगर हम सिर फिरे हैं
है कहाँ हम में समझ इतनी
करते बहुत कोशिश
हम भी झूठ बोलें
ताक में रख शर्म
बबूलों को कहें बरगद
सीख लें हम भी हुनर यह
पर करें क्या
इस भौथरे मस्तिष्क में
यह बात घर करती नहीं है
चाहते तो हैं बहुत पर क्या करें
यह आत्मा मरती नहीं है ।

बन्दी

बंद कर रखा
अंधेरों ने दियों को
आज इन अट्टालिकाओं में
जो थे कभी विश्वास जन-पथ के
कर जोड़
पंक्ति बद्ध
देखो ! हैं खड़े, मस्तक झुकाए, प्रहरियों से।
बिना संकेत के
इन स्याह चेहरों के
तनिक भी हिल नहीं सकते
क्या करें आशा? भला इन बंदियों से
कि वे घर गली आंगन
यहाँ पर या वहां
आलोक बिखराएं।
खो चुके ये अस्मिता अपनी
कोहरे से आवरित चेहरा
दे सको तो दो इन्हें शुभ-कामना
कि छोड़ कर अट्टालिका का मोह
जन-पथ पर चले आएं
पुनः आलोक बरसाएं।

महावृक्षों के नाम

हे महावृक्षो !
करो स्वागत
तुम्हारी कोंपलों का
इन्हीं से वंश चलता है
मत तरेरो आंख
भोंहे मत सिकोड़ो
आशीष बरसाओ
इन्हें सींचो, पनपने दो
राह में अवरोध बन कर जो खड़े हों
उन्हें रोको
उन्हें टोको
मत तरेरो आंख
भौहें मत सिकोड़ो।
हे महावृक्षो !

सदियों से तैरता प्रश्न

सूरज टूटा
अंधियाए दिन
पगलाई रातें
लड़खड़ाए पग हिमालय के
गिर पड़ी है
चीख कर कन्या कुमारी
भागवत पर गूंजता
यह बांसुरी का स्वर
अचानक रुक गया
एक युग पूरा का पूरा
चुक गया।
इतिहास का शाश्वत करुण पृष्ठ
लो लगा फिर से सुबकने
कब तक रहेगा लीलता
तम किरन को
तैरता यह प्रश्न
सदियों से
खुले आकाश में।

अट्टहास ही अट्टहास

अट्टहास
पर्याय वेदना का ।
अट्टहास
पर्दा-अज्ञान पर ।
अट्टहास
प्रतीक पशुता का ।
अट्टहास ही अट्टाहस ।

मेघ

अन्तर की उमस नें
ऐसा मेघ जन्मा
बन कर जो सागर
लहराता नयनों में
चढ़ता है ज्वार
पर छलक नहीं पाता है
द्वार तक
आ आ कर
लौट लौट जाता है।

ये लोग थे पोस्टर्स

रिटायरिंग रूम की
डारमेट्री में
आमने सामने बैठे ये लोग
दीवारों पर चिपके
पोस्टर्स ।

हाथ मत फैलाना

जब मैं
तुम्हारे साथ हूं
तो फिर
तुम अनाथ कैसे हो ?
हमारे चार हाथ
हिलकर, हिलायेंगे
नादिरशाही प्रहार कर रहे
उस दुर्भाग्य को
सीप से झर रहे
इन मोतियों से
अपनी झोली भर लूं
किसी की तिजोरी में बंदी
अपने सौभाग्य को छीन लाएं
मैं झुकाने में लगा दूं पहाड़ों को
तुम इन पत्थरों के सामने हाथ मत फैलाना
देखो !
गीतों के हिय हंस
आ रहे हैं तुम्हारे आंगन ।

पर कटा पक्षी

पर कटा पक्षी
पिंजरे में रहे
या बाहर
बात एक ही है।
जाएगा कहाँ
आएगा तो आप ही के पास
उसे चुग्गा चाहिए।
ज्यादह से ज्यादह
कुछ समय तक
चीं चीं कर लेगा
करने दीजिए
अपने आप चुप हो जाएगा
करके करेगा भी क्या ?
जाएगा कहाँ
आएगा तो आप ही के पास
उसे चुग्गा चाहिए।
कभी कदास
जंगल के साथ
अपने रिश्ते को याद कर
आँखें भर लाएगा

धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा
आँसू आँखों में ही सूख जायेंगे
वह भूल जाएगा
कि उसका भी
कभी कोई खुला आकाश था ।
संगमरमर के आँगन में रम जाएगा
रमना ही पड़ेगा
और करेगा भी क्या
जाएगा कहाँ
आएगा तो आप ही के पास
उसे चुग्गा चाहिए ।

नौका और समुद्र

लम्बी से लम्बी यात्रा के लिए
जरूरी होता है
उठना एक कदम का।
चाहे फिर वह छोटा सा ही क्यों नहीं ?
क्रुद्ध सागर
धुंधियाया तट
अनचीन्हा पथ
आदत से मजबूर
मेरे हाथ
थामे पतवार
उतार चुके नौका को
धार के बीच
दोनों ही मंजूर
हार हो या जीत।

ऐसे दीपक की तलाश में

इतिहास के दालानों से निकल कर
खड़ा हूं
वर्तमान के चौराहे पर ।
विलीन होता जा रहा हूं
कोलाहल में ।
कभी कदास
मेरा हाथ
छू लेता है अपने चेहरे को
और
आभास करा देता है अपने पन का ।
कुछ गर्म ठंडी सांसे
आस पास एहसासता हूं
तुषारापात होता है
पनपते विश्वासों के
अंकुरों की खेती पर
आवाज से ज्यादह असरदार होता है मौन
प्रणाम करता हूं
उन सपनों को
जो घूंघट में ही बेवा हो गए
हर अंधेरा

अपने अलग ढंग से तोड़ता रहा मन को
मुझे चाहिए
ऐसी आस्थाओं का दीपक
जो पी सके
अंधेरे समुद्र को
एक ही चुल्लू में।

जन्म-घुटटी के साथ
तन मन में रमा रहता है
दिन, महीने वर्ष-युग
सदियाँ बीत जाती है
पर वे रहते हैं
आने वाली पीढ़ियों के संघर्षों में
स्वरों में
जो रचती रहती है एक इतिहास
जन्म देने के लिए
दूसरे इतिहास को।

तुम और वे चेहरे

जब तक तुम थे
हम तुम्हारे साथ थे
बैठकों में, गोठिष्यों में
सभाओं में, सम्मेलनों में
हमें
हर वक्त आस पास देख कर
तुम्हारे निश्छल हृदय को
शायद यह विश्वास हो गया होगा
कि ये मेरे अपने हैं
और ऐसा सोचना
तुम्हारे लिए ठीक भी था
क्योंकि
तुम सभी के अपने थे
हर आँख के आँसू
तुमने पोंछे थे
हर दिल का दर्द
तुमने जिया था।
अमृत औरों को बाँटा
जहर खुद ने पिया था।
वे ऊँचाइयों

अंतिम सीढ़ी पर पहुंच
एक जोर की ठोकर लगा दें
जिससे हम बिखर जाय
और तब तक बिखरे रहें
जब तक आप जैसा कोई और
ऊँचा, और ऊँचा, बहुत ऊँचा चढ़ने के लिए
एक और पिरामिड बनाने की इच्छा से
हमें घास डाल कर इकट्ठा नहीं कर लेते
हम सच कहते हैं
हम से डरो मत
हम क्रांति कर ही नहीं सकते ।

बराबर हिलता हाथ।

झुकी हुई गर्दनों के बीच
एक ललाट
अपने पूरे तेज के साथ चमक रहा है
बंदियों की मुद्रा में बंधो
अनेक युग-बाहुओं के बीच
एक हाथ
बराबर हिल रहा है
अनेक बंद अधारों के बीच से
एक स्वर निरंतर फूट रहा है
यह जानते हुए भी
कि कभी भी हाथ कट सकता है
जबान खींची जा सकती है
सिर धड़ से अलग किया जा सकता है
पर इससे क्या ?
नैंन छिन्दन्ति शस्त्राणि
नैंन दहति पावक:
तब
भय नहीं रहता
अंधेरे का
कृष्ण का कर्मयोग

अपने और सपने

अपने ?
निरे सपने
यह मेरे पाँव
लोहू लुहान
रिसते घावों की छाँह
पलते हैं नासूर
बींधा है फूलों ने
शूलों से शिकायत क्यों ?

सच कहते हैं।

हमसे डरो मत
हम क्रांति नहीं कर सकते
हम जानते ही नहीं
क्रांति होती क्या है ?
हमने किसी से सुना था
कुछ पागल थे
आवाज उठाने वाले
आन्दोलन किए
गोलियाँ खाईं
और मर गए।
मात्र इसलिए कि हम जिन्दा रहें।
पर
हम क्षण-क्षण मरने वाले लोग
जिन्दा रहना जानते ही कहां हैं ?
हम लोगों को यह भीड़
प्रणाम सी झुकेगी
पिरामिड बनाएगी
जिस पर पैर रख कर
आप
ऊँचे और ऊँचे, बहुत ऊँचे चढ़ कर

जो कभी स्वयं पर गर्वित थी
सिर झुकाए खड़ी हैं
कहाँ गए वे चेहरे
जो तुम्हारे इर्द गिर्द मंडराते थे
वे आँखें
जिनके आंसू तुमने पिये थे
आज दिखाई क्यों नहीं देते ?
क्यों अवरुद्ध हैं वे स्वर
जो तुम्हारे प्रति अटूट आस्थाघोष करते
थकते नहीं थे ।
अगर आज भी तुम मुझसे कहीं मिलो
और मैं यह सवाल करूँ
तो तुम मुस्करा भर दोगे
और तुम्हारी वह अर्थ भरी मुकान
छलनी-छलनी कर देगी मेरे अन्तर को ।

ये रिश्ते

मिलने को
हम फिर मिल सकते हैं
कभी भी और कहीं भी
साल में कई बार
और न मिलें
तो उम्र भर नहीं
पर इससे क्या होता है
माँ और बेटे का
खून का रिश्ता होता है
कौन माँ है
जो अपने बेटे के साथ
आशीर्वाद बन कर नहीं रहती
और कौन होगा बेटा
जो कोसों दूर बैठे
अपनी मां की झिड़कियों,
थपकियों की याद कर
माँ की गोदी में
चिपकने को तड़प नहीं जाता।

यह रिश्ते
मिट्टी की सुराही नहीं है
कि गिरते ही टूट जाय
यह रिश्ते
कोई बोझ नहीं है
कि फिसले और छूट जाय
आखिर यह खून के रिश्ते होते हैं
जिनको निभाने के लिए
प्राण माँ के हों या बेटे के
दोनों ही सस्ते होते हैं।

बो गए वे बीज

बो गए वे बीज
कुंठा के
सींच पनपाया
उन्होंने
और ये जो
हो रहे गर्वित
देख कर ये फूटते अंकुर
मान कर उपलब्धियाँ अपनी
लहलहाएंगे कभी जब खेत
काटेंगे फसल
तब क्या करेंगे लोग वे
जिनको किया आश्वस्त
फलने तक फसल के ।

दर्द और अहं

तुम नहीं आते हो
तो मत आओ
नहीं आ सकने में
और नहीं आना चाहने में
जो अन्तर है
वही मुझे सालता है ।
रह-रह कर
एक दर्द उठता है
जिससे तिलमिला जाता हूं
कभी-कभी सोचता हूं
मैं खुद चलकर तुम तक आऊं
पर
तुम्हारी तरह
मेरा भी अह
मुझे रोकता है ।

तुम वही हो।

आज जब तुम मुझसे मिले
तो हमेशा से
कुछ नए लगे।
मेरे अन्दर का सोया गीत
फिर अंगड़ाई लेने लगा
वैसे कई बार मैंनें
तुम्हें देखा है
पर पता नहीं क्यों
इस बार कुछ ऐसा लगा
कि तुम वही हो
जिसके लिए
मैं अब तक रहा हूं
तुम वही हो
जिसके कारण में जो कुछ लिखता गीत बन जाते
इसके-उसके
सभी के मीत बन जाते।

प्रतीक्षा में

उस रात
आकाश में बादल भी छाए थे
रह-रह कर
बिजली भी कौंधी थी
कहीं दूर
बोलती रही कोयल
पर
बारिश नहीं हुई
प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा में
रात बीत गई।
पपीहा पुकारता रहा
पि ऽ पि ऽ

वे लोग ये लोग

वे लोग
जिन्होंने अपने पसीने से
नहीं नहीं खून से
सींचा था
उन खेतों को
उनमें फसल फली है
तो उसको काट रहे हैं
ये लोग
जिन्होंने न खाद दिया न पानी
न खुदाई की न बुवाई
इसे खायेंगे
इन लोगों के
लाडले
उनके पालतू जानवर
और
भौंकेंगे-चिंघाड़ेंगे-हिनहिनायेंगे
उन लोगों के बेटे बेटियों पर
जिन्होंने अपने पसीने से
नहीं नहीं
खून से सींचा था
इन खेतों को ।

आदमी और लिबास

जो चौबीसों घण्टे
ओडे रहता है लिबास
अपनी कुर्सी का
घूरता रहता है
अन्दर आते जाते चहेतों को
चढ़ाता उतारता रहता है ऐनक
पर्दों के अन्दर
कूलर की ठंडी हवा में
काम की थकान का बहाना करते
बतियाता या फिर निंदियाता रहता है
जो चौंक उठता है
दूर भाष की घंटी सुन
आँखे मलता चाय की
चुस्कियें लेता
हाँ हूं हुकम हजूर करता है
जो कराता है एहसास
आपको मुझे अपने होने का
पर वह जो भी है
फकत एक लिबास है

कई बार

कई बार
मन करता है
मैं तुम्हें
ऊँचे बहुत ऊंचे स्वर में पुकारु
पर
कोई जैसे दबाने लगता है कंठ।
एक वेचारी आह
निकल कर लुप्त हो जाती है
कई बार
मेरे पाँव
तुम्हारे द्वार तक आने को उठते हैं
तो न जाने कौन
एक झटके से दरवाजा बंद कर देता है
मैं असहाय सा
वहीं बैठ जाता हूँ।
कई बार
मैं होना चाहता हूँ तुम
पर तब
कोई वो दिखाई पड़ता है
और मैं
खुले आकाश में
गिनने लगता हूँ तारे।

वह करता क्या है ?

ये कठ पुतलियाँ
जिन्हें नाचते देख
आप और हम हँसते हैं
इनके आँसुओं को कहाँ देखते हैं ?
वह
जो इन्हें
डोरी बाँध कर नचाता है
ऊपर-नीचे
दाँए-बाँए
दिन-रात घुमाता है
कितना समझदार है
बिना कुछ दिए
धन जुटाता है
यश कमाता है
वह करता क्या है
इन्ही कठपुतलियों को ही तो नचाता है
यही कठपुतलियें
जिन्हें नाचते देख
आप और हम हंसते हैं ।

फिसलन

समय फिसल रहा है
समय का इस तरह फिसलना
एक हरकत है
और वह भी साधारण नहीं
समय के साथ
दिन-सप्ताह-वर्ष फिसलते हैं
और विदाई की इस वेला में
साथ छोड़ जाते हैं
कितने ही लोग कई स्थान
और कैसे-कैसे कोमल कठोर स्वयं
सामने रह जाता है
यादों का हिलोरें लेता
सागर

बंधी नौका बंद शेर

खूँटे से बंधी नौका
और
पिंजरे में बंद शेर
दोनों ही खो बैठते हैं अस्मिता
नौका
उछलती है कूदती है
पर इतनी ही
जितनी छूट उसे वह जो देती है
जिससे वह बंधी है
घूमता शेर भी है
पर उतनी सी जगह में
जो पिंजरे में निश्चित है
पिंजरे में शेर
खो देता है अपना शेरत्व
और बन्दरगाह पर नौका अपना महत्व !

——

शिक्ष
भा
व
में नव
के न